© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 विनय कुमार सिंह
शोध निर्देशक,
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर

सूर्यकान्त सावन
शोधकर्त्ता,
टी0डी0 पी0जी0 कालेज, जौनपुर
सम्बद्ध
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन **''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''** है। अध्ययन के उद्देश्य के रूप में क्षेत्र के आधार पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का अलग–अलग राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखा गया है। प्रस्तुत अध्ययन में कारण एवं प्रभाव देखने का प्रयास किया गया है अतः प्रस्तुत अध्ययन में कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ0 सुरेश कुमार सिंह (शिक्षा विभाग), संजय टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, दौसा (राजस्थान) एवं डा0 बी0बी0 पाण्डेय (शिक्षाविभाग), दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा निर्मित **''राजनैतिक अभिरूचि प्रश्नावली''** तथा शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए विद्यार्थियों के पिछले वर्ष की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण (एनोवा) सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया है। आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् पाया गया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता है अर्थात् स्नातक स्तर पर अध्ययनरनत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि राजनैतिक रुचि का प्रभाव पड़ता

है जबकि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का अलग–अलग सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर प्रभाव नहीं पाया गया।

की–वर्ड – स्नातक स्तर, विद्यार्थी, राजनैतिक रुचि, शैक्षिक उपलब्धि, प्रभाव

प्रस्तावना

आज के छात्र कल के नागरिक हैं। देश की प्रतिष्ठा, विकास, एकता, रक्षा एवं संप्रुभता बनाये रखने का दायित्व उन्हीं को निभाना है, किन्तु भारत ही नहीं समकालीन विश्वभर के छात्रों का अधिकांश भाग अनुशासनहीनता, क्षेत्रवाद तथा साम्प्रदायिकता के उन्माद जैसी संकीर्ण भावनाओं से ग्रसित है। उनमें निरन्तर नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है और वे स्वार्थ, छल, कपट तथा विकृत राजनीतिक विचारधारा की ओर उन्मुख होते हुए प्रतीत हो रहे हैं। छात्र एकता जिन्दाबाद का नारा लगाते हुये विद्यार्थियों के विशाल समूह सड़कों पर प्रदर्शन करते दिखाई पड़ते हैं। कहीं हिन्दी के विरोध में उत्तेजित छात्र बसें, फूंकते हैं कहीं उर्दू या अंग्रेजी के विरोध में सार्वजनिक सम्पत्ति को तोड़ते हैं। कहीं आरक्षण समर्थक तो कहीं आरक्षण विरोधी छात्रों के समूह नैतिकता और मानव मूल्यों को भुलाकर मरने–मारने पर उतारू हैं। आज का विद्यार्थी विश्वविद्यालय का सर्वश्रेष्ठ छात्र हेने की अपेक्षा अमुक दल का अध्यक्ष, मंत्री लिखे जाने पर अधिक गौरव महसूस करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा गौण पर राजनीति प्रधान हो गयी है। अब विद्यार्थी और राजनीति एक दूसरे के निकट आ गये हैं तो विद्यार्थियों की राजनीति में रूचि भी विशेष विचारणीय हो गई है। अतः राजनीतिक रूचि के वर्तमान पर विचार करने से पूर्व छात्र राजनीतिक के अतीत और उसके निरन्तर बदलते हुए स्वरूप को समझना अत्यंत आवश्यक है।

वर्तमान समय में विश्वविद्यालयों–महाविद्यालयों की राजनीति राष्ट्रीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है। आज विभिन्न दल विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अपने प्रतिनिधि चुनाव में उतारते हैं जिनमें लखनऊ, इलाहाबाद , दिल्ली एवं जे0एन0ऊ विश्वविद्यालय का अध्यक्ष पद राष्ट्रीय स्तर की राजनीति को प्रभावित करता है। तथा इसी राष्ट्रीय पार्टियों की छवि का आंकलन हो जाता है। अतः छात्रों की राजनीतिक रूचि का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है।

छात्र राजनीति की शुरूआत में तो महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के ज्यादातर छात्र ही भाग लेते थे, उसमें छात्राओं की सहभागिता कम ही रहती थी, लेकिन धीरे–धीरे जैसे–से छात्र संघ की जड़े मजबूत होती गयी उनमें छात्राओं की भी सहभागिता बढ़ती गयी। पिछले कई वर्षो में हम दिल्ली

विश्वविद्यालय के छात्र संघ को देखे तो छात्राएं अधिक छात्र संघ पदाधिकारी चुनी जा रही हैं और छात्र संघ में बढ़–चढ़ कर भाग ले रही हैं। समाज को एक नयी दिशा देने का निर्णय छात्र एवं छात्राएं कर रही हैं।

शिक्षा राष्ट्रीय विकास और अध्ययन की आधारशिला है शिक्षित समाज पर राष्ट्र का आर्थिक और औद्योगिक विकास निर्भर है। शिक्षा पर होने वाला राष्ट्रीय व्यय महत्वपूर्ण होता है। भारत में शिक्षा पर व्यय का एक बहुत बड़ा भाग लगभग 70प्रतिशत (नयी शिक्षा नीति 1986 के अनुसार) व्यर्थ हो जाता है अथवा अवरूद्ध हो जाता है। इसका बहुत बड़ा कारण विश्वविद्यालय या महाविद्यालय प्रशासन की अकर्मण्यता या उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार होता है, जिसको मजबूत छात्रसंघ के द्वारा कम किया जा सकता है। अतः शिक्षा पर राष्ट्रीय व्यय की अवरूद्धता और व्यर्थता को रोकने के लिए ऐसे शोध कार्यों की आवश्यकता है जो उपर्युक्त कारणों पर सार्थक प्रभाव डाल सके।

छात्रों की राजनीतिक रूचि के कारण उत्पन्न अनुशासनहीनता की समस्या अब कक्षाओं अथवा महाविद्यालया परिसर तक सीमित न रहकर बाह्य वातावरण में भी फेल चुकी है। अनुशासनहीनता की जो भावना छात्रों में निम्न कक्षाओं में जन्म लेती है वह महाविद्यालय स्तर पर पहुंचते–पहुंचते उग्र रूप धारण कर लेती है। अनेकों शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और पत्रकारों द्वारा छात्रों की राजनीतिक रूचि के विषय में बताये गये कारण अत्यधिक विषम एवं विरोधी है।

मिसबर्न(1976) ने कहा– '' यदि छात्रों को शिक्षण संस्था के विभिन्न अंगों में अधिकतम भागीदारी दे दी जाये तो छात्र राजनीति से विमुख होकर व्यवसायी एवं अर्द्धव्यवसायी बन सकते हैं। यदि इस विषय पर गहन चिन्तन किया जाये तो स्पष्ट है कि छात्रों की राजनीतिक रूचि का मूल कारण तथा शोध क्रियाकलाप उसका परिणाम है।''

श्रीवास्तव, कृष्ण मोहन (2015) ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का राजनीतिक जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध है।

छात्रों की राजनीतिक रूचि पर या तो कार्य हुआ ही नहीं है या उपलब्ध निष्कर्षों में विरोधाभाष है। अतः प्रस्तुत अध्याय में महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की राजनीतिक रूचि का अध्ययन संकाय, लिंग, निवास स्थान, परिवार के स्वरूप, व्यवसाय आय और जाति के आधार पर किया गया है, जिससे महाविद्यालय स्तरीय विद्यार्थियों की राजनीतिक रूचि के विषय में सार्थक और व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हो सके। यह जानकारी प्रशासन एवं शिक्षाविदों को शिक्षा पद्धति में देश–काल एवं परिस्थिति के

अनुसार आवश्यक परिवर्तन करके ऐसी शिक्षा नीति बनाने में सहायता कर सकेगी जिससे महाविद्यालयों के परिसर स्वच्छ वातावरण और उपयोगी शिक्षा का केन्द्र बन सके।

समस्या कथन

''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध–प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में कारण एवं प्रभाव देखने का प्रयास किया गया है अतः प्रस्तुत अध्ययन में कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ0 सुरेश कुमार सिंह (शिक्षा विभाग), संजय टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, दौसा (राजस्थान) एवं डा0 बी0बी0 पाण्डेय (शिक्षाविभाग), दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा निर्मित **''राजनैतिक अभिरूचि प्रश्नावली''** तथा शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए विद्यार्थियों के पिछले वर्ष की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण (एनोवा) सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य–1 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

सारणी सं0 1

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को दर्शाते एफ–अनुपात

स्रोत	df	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F)
समूहों के मध्य	2	18718.95	9359.47	3.46
समूहों के अन्दर	197	534931.25	2701.67	
कुल	**199**	**553650.2**	**12061.15**	

.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 3.46 हैं, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' निरस्त की जाती है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता है।

सारणी सं0 1.1

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च	51	327.75	8.97	9.95	1.11	असार्थक
	मध्यम	98	337.69				
2.	उच्च	51	327.75	10.29	13.59	1.32	असार्थक
	निम्न	51	314.16				
3.	मध्यम	98	337.69	8.97	23.54	2.62	सार्थक
	निम्न	51	314.16				

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य टी–मान क्रमशः 1. 11, 1.32 एवं 2.62 है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि मध्यम राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षा अधिक है जबकि उच्च एवं मध्यम एवं उच्च निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है। अतः सारणी से स्पष्ट हैं कि मध्यम राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न राजनैतिक रुचि रखने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। इसका कारण यह हो सकता है कि मध्यम राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की राजनैतिक में अपने आपको बनाये रखने के लिए उच्च शिक्षा के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च बनाये रखते होंगे।

उद्देश्य–2 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

सारणी सं0 2

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को दर्शाते एफ–अनुपात

स्रोत	df	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F)
समूहों के मध्य	2	2408.59	1204.29	0.40
समूहों के अन्दर	97	298561.41	3046.55	
कुल	**99**	**300970**	**4250.84**	

.05 स्तर पर असार्थक

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 0.40 हैं, जो 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता नहीं है।

उद्देश्य–3 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की राजनैतिक रुचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

सारणी सं0 3

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को दर्शाते एफ–अनुपात

स्रोत	df	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F)
समूहों के मध्य	2	10320.21	5160.10	2.26
समूहों के अन्दर	97	223722.55	2282.88	
कुल	**99**	**234042.8**	**7442.99**	

.05 स्तर पर असार्थक

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 0.40 हैं, जो 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता नहीं है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता है अर्थात् स्नातक स्तर पर अध्ययनरनत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि राजनैतिक रुचि का प्रभाव पड़ता है।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता नहीं है अर्थात् शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर राजनैतिक रुचि का प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न राजनैतिक रुचि वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता नहीं है अर्थात् ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर राजनैतिक रुचि का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर राजनैतिक रुचि का प्रभाव न पाया जाना इस बात को इंगित करता है कि वर्तमान समय में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी अपने कैरियर को लेकर अधिक चिन्तित होना तथा राजनैतिक में यदि रुचि लेता है भी तो वह अपने शिक्षण कार्यों पर भी विशेष ध्यान देता है। अतः चाहे वह उच्च राजनैतिक रुचि रखता हो या मध्यम तथा या तो निम्न, फिर भी वह अपने शिक्षा में रुचि को बनाये रखता है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

- जौहरी, जगदीश चन्द्र, सीमा (2004) आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, स्टरर्लिंग पब्लिशर्स प्रा0लि0, ए–59, ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली।
- तिवारी, गोविन्द जयप्रकाश (1971), सामाजिक सर्वेक्षण, प्रथम संस्करण, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
- तिवारी, जयप्रकाश (1974), मापन, मूल्यांकन एवं परीक्षण, श्री मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा।
- मुखर्जी, रविन्द्रनाथ (1973), सामाजिक नियंत्रण सामाजिक परिवर्तन, सरस्वती सदन, 6, यू0ए0 जवाहर भवन, दिल्ली।
- भाटे, सुरेश चन्द्र गौरीशंकर (1976), सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण, स्टूडेन्ट्स फ्रेण्ड्स एण्ड कम्पनी, हिन्दू विश्वविद्यालय।
- श्रीवास्तव, कृष्ण मोहन (2015). माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में जनतंत्र के प्रति अभिवृत्ति तथा राजनैतिक जागरूकता का उनके शैक्षिक निष्पादन से सम्बन्ध का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर।